॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
441

श्रीनारायणपण्डितविरचितः

हितोपदेशः

'अभिनवराजलक्ष्मी' संस्कृतटीकालङ्कृतः
विस्तृतभाषाटीकाविभूषितश्च

संस्कृतटीकाकारः
श्रीगुरुप्रसादशास्त्री
व्याकरणाचार्यः, न्यायाचार्यः, दर्शनाचार्यः

भाषाटीकाकारः
आचार्य श्रीसीतारामशास्त्री
एम.ए., व्याकरणाचार्यः, 'साहित्यरत्नम्'

सम्पादकः
प्रो० बालशास्त्री
अध्यक्षः, व्याकरणविभागः
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकायः
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रमणी

विषय	पृष्ठाङ्क
'मित्रलाभ' नामक प्रथम प्रकरण	
कथामुख	१
१. वृद्धव्याघ्र-लुब्धविप्र कथा	३०
२. मृग-शृगाल कथा	५८
३. जरद्गव-बिडाल कथा	६०
४. मूषक-परिव्राजक कथा	९३
५. लीलावती-वणिक्पुत्र-कथा	९५
६. सञ्चयशीलजम्बुक कथा	१२१
७. राजपुत्रवणिग्वधू कथा	१३८
८. हस्तिधूर्तशृगाल कथा	१४१
'सुहृद्भेद' नामक द्वितीय प्रकरण	
१. कीलोत्पाटिवानर कथा	१६७
२. चीत्कारिगर्दभ कथा	१६८
३. दधिकर्णबिडाल कथा	१९६
४. घण्टाकर्णकुट्टनी कथा	२०२
५. स्वर्णरेखानापितादि कथा	२१४
६. गोपीज़ारद्वय कथा	२२३
७. काकी-कनकसूत्र-सर्प कथा	२२७
८. मदोन्मत्तसिंह-शशक कथा	२२८
९. टिट्टिभ-समुद्र कथा	२४४
'विग्रह' नामक तृतीय प्रकरण	
१. पक्षि-वानर कथा	२७०
२. व्याघ्रचर्मावृतगर्दभ कथा	२७३
३. गज-शशक कथा	२७७

४. हंस-काक कथा २८५
५. काक-वर्त्तक कथा २८७
६. रथकार-तद्वधू-जार कथा २८९
७. नीलवर्णशृगाल कथा ३०९
८. शूद्रक-वीरवर कथा ३३१
९. निधिलुब्धनापित कथा ३४१

'सन्धि' नामक चतुर्थ प्रकरण

१. हंस-कूर्म-कथा ३६९
२. अनागतविधात्रादिमत्स्यत्रय कथा ३७१
३. वणिग्भार्याजार कथा ३७२
४. बक-नकुल कथा ३७५
५. मुनि-मूषिक कथा ३८०
६. बक-कर्कट कथा ३८२
७. ब्राह्मण-सक्तुशराव कथा ३८६
८. समबलसुन्दोपसुन्ददैत्य कथा ३९०
९. ब्राह्मण-च्छाग-धूर्त्तत्रय कथा ४०६
१०. चित्रकर्ण-काकादि कथा ४०८
११. मन्दविष-मण्डूक कथा ४१४
१२. ब्राह्मण-नकुल कथा ४३१

हितोपदेश के श्लोकों में वर्णित विषय

विषय	पृष्ठ	श्लोक
मंगलाचरण	१	
हितोपदेश की प्रशंसा	२	प्र. १
विद्या की प्रशंसा	३,२०,२१,२४	प्र. २
शास्त्र की प्रशंसा	६	प्र. ४,३८-४०-७
यौवन, धन, प्रभुता और अज्ञानता की निन्दा	६	प्र. १०
कुपुत्र की निन्दा	७-१३,१५६	प्र. ११
		प्र. १२ से २४ तक
संसार के छः सुख	११	सु. ७
धर्म की प्रशंसा	१४	प्र. २०
प्रारब्ध की मुख्यता	१५,१८	प्र. २५,२६
	१६३,१७९,१८०	प्र. २८,२९,३३
उद्योग की प्रशंसा	१६,१७,१८,१९,२०	मि. २१,५०,५१,५२
		प्र. ३०,३१,३२ से ३७ तक
प्रारब्ध की प्रशंसा	१८	प्र. ३२
सत्संग की प्रशंसा	२१-२४	प्र. ४१ से ४७ तक
धर्म के आठ मार्ग	१५६	मि. ८
दान की सफलता	३४,३६	मि. ११,१६
आत्मा की रक्षा	३४	मि. १२
पण्डित का लक्षण	३५,११८	मि. १४,१७०
स्वभाव की उत्कर्षता	३७,३०८	मि. १७ वि. ५८
विश्वास की अकर्तव्यता	३८,७९	मि. १९,८७

प्र. = प्रस्ताविका मि. = मित्रलाभ
सु. = सुहृदभेद वि. = विग्रह
स. = सन्धि

विषय	पृष्ठ	श्लोक
स्वभाव की मुख्य परीक्षा	३८	मि. २०
वृद्धों के वचन का ग्रहण	४०	मि. २३
संसार के छः दुःख	४०	मि. २५
लोभ की निन्दा	४१,४२	मि. २६,२७,२८
अग्रगण्यता की निन्दा	४२	मि. २९
बन्धु की प्रशंसा तथा लक्षण	४३,७०,४०९	मि. ३१,७३, सं.६१
महात्माओं के स्वभाव की प्रशंसा	४४,१२७	मि. ३२,१९२
त्यागने के योग्य छः दोष	४५	मि. ३४
समूह की प्रशंसा	४५,४६	मि. ३५, ३६
सच्चे मित्र की प्रशंसा	४७,१३३	मि. ३८,२०९,२१०
पुण्यात्मा का लक्षण	४७	मि. ३९
शुभाशुभ कर्म का फल	४९	मि. ४०,४१
आत्मा की मुख्य रक्षा	५०	मि. ४२
प्राणों की मुख्य रक्षा	५१	मि. ४३
पराये अर्थ धन-जीवन का त्याग	५१,३३१	मि. ४४, वि. १००
यश की मुख्यता	५३	मि. ४७,४८
शरीर और गुण का अन्तर	५३	मि. ४९
अनेक मित्र करने की मुख्यता	५६	मि. ५३
समान के साथ समान की प्रीति	५७,५८	मि. ५४,५५
अपरिचित को आश्रय न देना	५८	मि. ५६
केवल जातियता को सोचकर अनादर करने की निन्दा	६२	मि. ५८
अतिथि का सत्कार	६३,६४,६५,८७,८८	मि. ५९ से ६३ तक १०७,१०८
स्वर्ग जाने में मुख्यता	६५	मि. ६४
धर्म की मुख्यता	६६	मि. ६५
उदर के लिये पातक-निन्दा	६७	मि. ६८
अल्पगुणी की प्रशंसा	६७	मि. ६९

विषय	पृष्ठ	श्लोक
व्यवहार से मित्र और शत्रु का ज्ञान	६८	मि. ७१
मित्र, शूर, भार्या और बान्धव की परीक्षा	६८	मि. ७२
विपत्ति और मृत्यु के पास होने का लक्षण	७०,७३,८०	मि. ७४,७६,९१
कुमित्र का त्याग	७३	मि. ७७
विश्वासघात	७४	मि. ७८
विश्वासघाती की निन्दा	७५	मि. ७९
दुर्जन की निन्दा	७५,७६,७९,२३७, २३८,२५२,२५३,२५८	मि. ८०,८१,८२,८९, सु. १३७ से १३९ तक १६४,१६५ वि. २३
पाप-पुण्य के फल मिलने का समय	७६	मि. ८३
सज्जनों के स्थिर चित्त की प्रशंसा	७७	मि. ८५,८६
मार्जार, भैंसा, भेड़, काक और क्षुद्र मनुष्य— इनके विश्वास की अकर्तव्यता	७९	मि. ८७
शत्रु से मेल करने का त्याग	७९	मि. ८८
दुर्जन और सज्जन का अन्तर	८१	मि. ९२
संगति का कारण	८१	मि. ९३
सज्जन और दुर्जन का आकार	८१	मि. ९४
श्रेष्ठ मित्र के गुण	८२	मि. ९६
मिष्ट भाषण की प्रशंसा	८३	मि. ९७
मित्र के दूषण	८३	मि. ९८
महात्मा और दुरात्मा का लक्षण	८४,८५	मि. १००,१०१
बुद्धिमान् की प्रशंसा	८५	मि. १०२
परोपदेश में चतुरता	८५	मि. १०२
दुष्ट देश में निवास की निन्दा	८६,८७	मि. १०४,१०५,१०६
वृद्ध पति की निन्दा	८९,९०	मि. ११० से ११३ तक
स्त्रियों की निन्दा और दूषण	९१-९२,९४,९५,९६ २२०,२२२,२२३,२२४	मि. ११४ से १२२ तक सु. ११५ से ११९ तक

विषय	पृष्ठ	श्लोक
धन की प्रशंसा	९७,९८,९९,१५५-१५६, १५७,१५८,२०५	मि. १२३ से १२९ तक सु. २,३,८,९,१०,९३
बुद्धिमान् के लिये नव गुप्त मन्त्र	९९,१००	मि. १३०,१३१
मनस्वी की प्रशंसा	१००,१०१,१०२	मि. १३२ से १३५ तक
निर्धनता की निन्दा	१०३,१०४,२०५	मि. १३६ से १३८, सु. ९३
याचना की निन्दा	१०४	मि. १३९
पुरुष विडंबना	१०४	मि. १४०
पुरुष के जीवन में मरण और मरण में विश्राम	१०५	मि. १४१
लोभ की निन्दा	१०५	मि. १४२
असन्तोष की निन्दा	१०६	मि. १४३
सन्तोष की प्रशंसा	१०६,१०८	मि. १४४,१४५,१४८
निराशा की प्रशंसा	१०७	मि. १४६
मनुष्य के जीवन की प्रशंसा	१०७	मि. १४७
धर्म, सुख, स्नेह आदि का निर्णय	१०८	मि. १४९
चतुरता की प्रशंसा	१०९	मि. १५०
मनुष्य के लिये मुख्य त्याग	१०९	मि. १५१
पराधीनता की निन्दा	११०	मि. १५२
धनहीन जीवन की निन्दा	११०	मि. १५३
संसाररूपी वृक्ष के दो फल	१११	मि. १५४
धर्म की प्रशंसा	१११	मि. १५५
दान की प्रशंसा	१११,१५६,१५८	मि. १५६ सु. ८,१०, ११,१२
कृपण की निन्दा	११२,११३,११४	मि. १५७ से १६२ तक
संसार में दुर्लभ वस्तु	११४	मि. १६३
मृत्यु के निमित्तकारण	११५	मि. १६५
धनवान् के धन का निर्णय	११७	मि. १६८,१६९
उद्योगी पुरुष की प्रशंसा	११८,११९,१२०	मि. १७१ से १७६ तक

विषय	पृष्ठ	श्लोक
स्थानभ्रष्ट होने की निन्दा	११९	मि. १७६
सुख-दुःख का भोग	१२०	मि. १७७
लक्ष्मी का निवास	१२०	मि. १७८
वीरपुरुष की प्रशंसा	१२१	मि. १७९
धनवान् होकर निर्धनता का घमण्ड	१२२	मि. १८०
किञ्चित् काल भोगने योग्य वस्तु	१२२	मि. १८१
ईश्वर के आधीन जीविका	१२३,१२४	मि. १८२,१८३
धन की निन्दा	१२४,१२५,१२६	मि. १८४ से १८९ तक
तृष्णा के त्याग की प्रशंसा	१२६	मि. १९०
सज्जन की प्रशंसा	१२७	मि. १९३
दानी मनुष्य की प्रशंसा	१२८	मि. १९४
चार प्रकार के मित्र	१२८	मि. १९५
मंत्री की प्रशंसा	१२९	मि. १९६
स्त्रियों के भ्रुकुटीरूपी बाणों से धैर्य का नाश	१२९	मि. १९८
स्त्रियों के दोष	१२९	मि. १२९
पतिव्रता का लक्षण	१३०	मि. २००,२०१
राजा की प्रशंसा	१३१,१३२,१९२,१९४ ३६२,३६३,४०६	मि. २०३ से २०६ तक सु. ८१,८२, वि. १४४, १४५, सं. ५८
दुःख में दुःख का होना	१३३	मि. २०८
उत्पत्ति का अवश्य नाश	१३५	मि. २११
मित्र की प्रशंसा	१३६,१३७	मि. २१३,२१४
निश्चित कार्य पर दृढ़ता	१३७	मि. २१५
उन्नति के विघ्न	१५५,१५६	सु. ४,५
पुत्रनिन्दा	१५६	मि. ७
धन, बल, शास्त्र आदि की सफलता	१५७	मि. ९
उद्यम की प्रशंसा	१५९	सु. १३,१४,१५
आयु की बलवानता	१६०,१६१	सु. १६,१७,१८

विषय	पृष्ठ	श्लोक
सेवा की निन्दा	१६३,१६४,१६५	सु. २० से २७ तक
सेवा की प्रशंसा	१६६,१७०,१७२	सु. २८,२९,३४,३५
स्वामी सेवक की निन्दा	१७०	सु. ३२
परोपकार के खातिर जीने का फल	१७२,१७३,१७५, १७६	सु. ३६ से ४४ तक
मूर्ख की निन्दा	१७६,१८०	सु. ४५,५२
कर्म की प्रशंसा	१७७,१७९	सु. ४६ से ५०
पण्डित का लक्षण	१७९,१८३	सु. ५१, ६२
सेवा की रीति	१८०,१८१	सु. ५४,५५
राजा के गृहयोग्य मनुष्य	१८१	सु. ५६
कायर पुरुष का लक्षण	१८१	सु. ५७
राजा, स्त्री और बेलका निकट आश्रय करना	१८२	सु. ५८
स्नेहयुक्त के चिह्न	१८२,१८३	सु. ५९,६०
विरक्त के चिह्न	१८३	सु. ६१
कुअवसर के वचन की निन्दा	१८४	सु. ६३
राजा के बिना आज्ञा कार्य की कर्तव्यता	१८५	सु. ६४
गुण की प्रशंसा तथा रक्षा	१८५	सु. ६५
राजा को तृण आदि की आवश्यकता	१८५	सु. ६६
मणि और कांच का भेद	१८७	सु. ६८
मनुष्य की उत्साहहीनता	१८७	सु. ६८
भृत्य तथा आभरण के योग्य स्थान आदि	१८८,१८९	सु. ७१,७२,७३
अवज्ञा की निन्दा	१९०,१९१	सु. ७७,७८
आपत्तिरूपी कसोटी पर सम्बन्धियों की परीक्षा	१९२	सु. ८०
छोटे शत्रु के लिये समानघातक	१९५	सु. ८४

विषय	पृष्ठ	श्लोक
विना शस्त्र मृत्यु	१९६	सु. ८५
मति-प्रशंसा	१९७,२२६	सु. ८६,१२१
बड़ों का समान पर बल	१९९	सु. ८७,८८
सेवक-प्रशंसा	२०१,२०२	सु. ९०,९१,९२
कोश का दूषण	२०५	सु. ९४
अधिक व्यय की निन्दा	२०५	सु. ९५
ब्राह्मण और क्षत्रिय को अधिकारी करने से हानि	२०६	सु. ९६,९७
पुराने सेवक की निन्दा	२०७	सु. ९८,९९
मन्त्री की निन्दा	२०८,२०९,२१०, २३२	सु. १०० से १०६ तक १२८१२८
	२९९,३३७,३३९	१२९ वि. ३८, १०३,१०४
दण्डनीय पुत्रादि को दण्ड देना	२१०	सु. १०७
अहंकार आदि कारण से नष्टता	२११	सु. १०८
राजा की कर्तव्यता	२११	सु. १०९
मनुष्य के कर्म को सूर्यादि का जानना	२१२	सु. ११२
चतुर की प्रशंसा	२१४	सु. ११३
उपाय की प्रशंसा	२२४	सु. १२०
विना मृत्यु के मृत्यु	२२५	सु. १२१
प्रियवस्तु की प्रशंसा	२३५	सु. १३२,१३३
राजा की दृष्टि की प्रशंसा	२३६	सु. १३४
सदुपदेश की प्रशंसा	२३६	सु. १३५
राज्यभेद का मूल कारण	२३६	सु. १३५-१३६
मित्र, स्त्री आदि की प्रशंसा	२३९	सु. १४१
राजा की निन्दा	२३९,२४९,२५०	सु. १४२,१५८,१५९, १६०
विना विचार के दण्ड की निन्दा	२३९,२४०	सु. १४३,१४४

विषय	पृष्ठ	श्लोक
मन्त्र का गुप्त रखना	२४१,२४६	सु. १४६,१४७,१५५
मृत्यु के चार द्वार	२४३	सु. १५१
राजा के सेवक की निन्दा	२४४	सु. १५२
धन, विषय, स्त्री आदि पाने से फल	२४४	सु. १५३
स्त्री, कृपण, राजा आदि की निन्दा	२४८	सु. १५६
उपकार उपदेशादि की नष्टता	२५१,२५२	सु. १६१,१६२,१६३
समान-बल में युद्ध की योग्यता	२५३	सु. १६६
वज्र और राजा के तेज की निन्दा	२५४	सु. १६८
शूरों के दुर्जन गुण	२५५	सु. १६९
युद्ध का समय	२५६	सु. १७०
संग्राम में मरने की प्रशंसा	२५६,२५७	सु. १७१,१७२
	३६३,३६५	वि. १४७ से १४८ तक
तेजहीन बलवान् की निन्दा	२५७	सु. १७३
युष्ट, याचना, धनादि की निन्दा	२५७	सु. १७४
धूर्त मनुष्य की निन्दा	२५८	सु. १७५
मृत्यु की प्रशंसा	२५९	सु. १७७
राजाओं का कर्तव्य कार्य	२५९,२६०,२६१	सु. १७८ से १८१ तक
दयालु राजा, लोभी ब्राह्मणादि की निन्दा	२६२	सु. १८२
राजाओं की नीति की प्रशंसा	२६२	सु. १८३
राजा की प्रशंसा	२६७	वि. २,३
मूर्ख की निन्दा तथा लक्षण	२६९,२९३	वि. ४,३१
पराक्रम की प्रशंसा	२७२	वि. ७
सज्जन-सेवा की प्रशंसा	२७५,२७६	वि. १०,११,१२
हाथी, सर्प, राजा, दुर्जन से भय	२७६	वि. १४
मन्त्री के लक्षण	२७९,२८१,३५५, ३५६	वि. १६,१७,१३३, १३४

विषय	पृष्ठ	श्लोक
दूत के लक्षण	२७८,२८२,२८३	वि. १५,१९,२०
दुर्जन के संग की निन्दा	२८४,२८५	वि. २१,२२,२३
पतिव्रता के लिये भर्ता की प्रशंसा	२८८,२९१,२९२	वि. २५ से ३० तक
पण्डित और मूर्ख का लक्षण	२९३	वि. ३१
भेदिये की प्रशंसा	२९५,२९६	वि. ३४,३५
मन्त्र का गुप्त रखना तथा प्रशंसा	२९७,२९८,३०१	वि. ३६,३७,४२
युद्ध की असम्मति	२९९	वि. ३९
साम, दाम, भेद से शत्रु का वशीकरण	३००	वि. ४०
विना युद्ध शूरता	३०१	वि. ४१
नीतिप्रशंसा	३०१,३०४,३२८	वि. ४३,४८,९७
बुद्धिमान् का लक्षण	३०२,३७०	वि. ४४, सं. ६
कार्यसिद्धि का विघ्न	३०२	वि. ४५
उपायज्ञाता की प्रशंसा	३०४	वि. ४९
बली के साथ युद्ध का त्याग	३०३	वि. ४६,४७
दुर्ग की प्रशंसा	३०४,३०५	वि. ५०,५१
दुर्ग के लक्षण	३०५,३०६	वि. ५२ से ५५ तक
लवण रस की प्रशंसा	३०७	वि. ५६
सभा, वृद्ध, धर्म, सत्य का निर्णय	३१२	वि. ६१
दूत की प्रशंसा	३०४,३१२,३१४, ३१५	वि. ४९,६०,६२,६३
असन्तुष्ट ब्राह्मण, सन्तुष्ट राजा और गणिका आदि की निन्दा	३१५	वि. ६४
विग्रह का समय	३१६,३१७,३१८	वि. ६५ से ६८ तक
युद्ध में जाने की तथा लड़ने की रीति	३१८,३१९,३२०, ३२१,३२२-३२३	वि. ६९ से ८२ तक

विषय	पृष्ठ	श्लोक
सेना के हाथी की प्रशंसा	३२३	वि. ८३
अश्वप्रशंसा	३२४	वि. ८४,८५
युद्ध की चतुरता तथा सेना का कार्य	३२४	वि. ८६
सेना की प्रशंसा	३२५	वि. ८७
बलहीन सेना की निन्दा	३२५	वि. ८९
राजा से स्नेह छुटने का लक्षण	३२५	वि. ९०
राजा को विजय पाने की रीति	३२६,३२७	वि. ९१ से ९५ तक
उदार, शूर तथा दाता का लक्षण	३३६	वि. १०२
शत्रु की सहज में मृत्यु	३४०	वि. १०७
शत्रु की सेना के नाश का उपाय तथा उपदेश	३४२,३४३, ३४४,३४५	वि. १०८ से ११४
राजा का दूषण	३४५	वि. ११५
आवश्यक उपदेश	३४६,३४७	वि. ११६ से ११९ तक
देवता गुरु आदि पर कोप न करना	३४८	वि. १२०
स्वास्थ्य में पण्डित्य	३४८	वि. १२१
बुद्धिमान् ओर बुद्धिहीन में भेद	३४९	वि. १२२
व्यय की प्रशंसा	३४९,३५०,३५२	वि. १२३,१२४,१२५
शूर की प्रशंसा	३५२,३५३	वि. १२६,१२७
राजा के महागुण	३५४,३५५	वि. १२९ से १३२ तक
दुर्गाश्रय प्रशंसा	३५६	वि. १३५
युद्ध में राजा की अग्रगण्यता	३५६	वि. १३६
दुर्ग के दोष	३५७	वि. १३७
दुर्ग के जय के उपाय	३५८	वि. १३८
युद्ध में यथावसर कर्तव्य	३५९,	वि. १३९
स्वामी मन्त्री की आपस में प्रशंसा	३५९	वि. १४०
समर में उत्साह	३६०,३६१	वि. १४१,१४२
राज्य के छः अंग	३६२	वि. १४३

विषय	पृष्ठ	श्लोक
भाग्य की निन्दा	३६८	सं. २
कर्म का दोष	३६८	सं. ३
मित्रोपदेश प्रशंसा	३६९	सं. ४
उपाय तथा अपाय का विचार	३७२	सं. ८
शत्रु के विश्वास की निन्दा	३७३	सं. ९
सेवक के उपकार की न मन्तव्यता	३७३	सं. १०
विचारहीन को उपदेश	३७५	सं. ११
नीच को उच्चपद देने की निन्दा	३७८	सं. १२
अधिक लोभ की निन्दा	३७८	सं. १३
मित्र और शत्रु का लक्षण	३७९	सं. १४
अप्राप्त चिन्ता की निन्दा	३८०	सं. १५
कुमार्गी राजा के मन्त्री की निन्दा	३८२	सं. १६
राजा को मन्त्री का अवलम्बन	३८३	सं. १७
समान के साथ भी मेल का उपदेश	३८५	सं. १९
ब्राह्मण-क्षत्रिय आदि की पूज्यता	३८६	सं. २०
मेल करने के योग्य सात मनुष्य	३८८	सं. २१
सन्धि (मेल) की प्रशंसा	३८९,३९०,३९२ ३९३	सं. २२ से २८ तक
सन्धि करने के लिये अयोग्य २० पुरुष	३९५,३९६,३९७, ३९८,४००	सं. ३४ से ४७
अयोग्य पुरुषों के साथ युद्ध न करने का कारण तथा फल	३९५,३९६,३९७, ३९८,३९९,४००	सं. ३४ से ४७ तक
नीतिज्ञान की प्रशंसा	४००	सं. ४८
राजा का चक्रवर्ती होने का उपाय	४००	सं. ४९
विश्वास देकर फँसाना	४०१	सं. ५१
अपने समान दुर्जन को भी सत्यवादी जानने से हानि	४०१	सं. ५२

विषय	पृष्ठ	श्लोक
सज्जन को दुष्टों के वचन से बुद्धि की भ्रष्टता	४०१	सं. ५३
क्षुधापीडित का कर्तव्य	४०२	सं. ५४
धर्महीन पुरुषका लक्षण	४०३	सं. ५५
अभयप्रदान की प्रशंसा	४०४	सं. ५६
शरणागत के रक्षा की प्रशंसा	४०५	सं. ५७
कार्य पड़ने पर शत्रु को मित्र मानना	४०७,४०९	सं. ५९,६०
संसार की अनित्यता आदि का वर्णन	४११-४२०	सं. ६२ से ८२ तक
रागियों को वन का दोष और विरक्तता का उपदेश	४२१	सं. ८४,८५
जल से अन्तरात्मा का शुद्ध न होना	४२२	सं. ८६
मनुष्य के लिये सुख	४२२	सं. ८८
सत्संग और रति का उपदेश	४२३,४२४	सं. ८९,९०
वृथा स्वयं गर्जना की निन्दा	४२४	सं. ९१
एक साथ शत्रु से युद्ध की निन्दा	४२५	सं. ९२
वात के भेद को विना जाने क्रोध की अकर्तव्यता	४२५	सं. ९३
शीघ्र नहीं किये कार्य की नष्टता	४२६	सं. ९४
राजा को सुख के अर्थ छः विषयों का त्याग	४२६	सं. ९५
मन्त्री के मुख्य गुण	४२७	सं. ९६
कार्य एकाएक करने से हानि	४२७	सं. ९७
कार्य साधन की प्रशंसा	४३०	सं. ९८
अभिमान की सर्वदा अप्रसन्नता	४३०	सं. ९९
पुरुषों क़ा कर्म के फल से निश्चय करना	४३१	सं. १००

विषय	पृष्ठ	श्लोक
दुर्जन से वञ्चित का सुजन में अविश्वास करना	४३२,४३३	सं. १०१,१०२
लोभी, अभिमानी, मूर्ख, पण्डित स्त्रीपुत्रादि को वश करने का उपाय	४३४	सं. १०३,१०४
सन्धि का उपदेश	४३५	सं. १०५
सोलह प्रकार की सन्धियाँ और उनके लक्षण	४३५-४४४	सं. १०६ से १२६ तक
धर्म की दृढ़ता	४४४	सं. १२७,१२८
सज्जन के संग मेल का उपदेश	४४४	सं. १२९
सत्य की प्रशंसा	४४५	सं. १३०
आशीर्वाद	४४५,४४६	सं. १३१,१३२,१३३